

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान् राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ॥

हे राजन् ! श्रीहरि के उस अत्यन्त विलक्षण रूप को भी पुनः-पुनः स्मरण करके मेरे चित्त में महान् आश्चर्य होता है और मैं बार-बार हर्षित हो रहा हूँ ॥ ७७ ॥

Hindi

Shloka 77

O My King, whenever I remember that most beautiful and divine vision of the Glorious Lord himself, I am struck with great amazement and wonder. My heart leaps with more joy and is filled with adoration for the Lord.

English